

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक अच्छा विद्यालय

राकेश राणा*

यह लेख गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के महत्व और उसे सुनिश्चित करने में एक अच्छे विद्यालय की अनिवार्य भूमिका को स्पष्ट करता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न मानकर उसे एक बहु-आयामी अवधारणा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें पाठ्यक्रम, शिक्षक, अधोसंरचना, संसाधन, मूल्यांकन, प्रबंधन और समुदाय की सहभागिता सम्मिलित है। लेख में यह रेखांकित किया गया है कि शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता का वास्तविक अनुभव विद्यार्थी, अभिभावक और समाज अपने-अपने दृष्टिकोण से करते हैं तथा भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में गुणवत्ता के मानक तय करना एक जटिल कार्य है। एक अच्छा विद्यालय वह होता है जो बच्चों के सर्वांगीण विकास— बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक और शारीरिक— पर समान रूप से ध्यान देता है। ऐसे विद्यालय में समावेशी और सुरक्षित वातावरण, प्रशिक्षित एवं प्रेरक शिक्षक, आधुनिक संसाधन, अनुकूली शिक्षण-पद्धतियाँ और सतत मूल्यांकन की व्यवस्था होती है। लेख यह भी स्पष्ट करता है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा समाज के समग्र विकास और सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति की कुंजी है। भविष्य के विद्यालय की परिकल्पना करते हुए लेख बताता है कि विद्यालय केवल पढ़ाई-लिखाई का केंद्र नहीं, बल्कि जीवनोपयोगी कौशल, सामाजिक उत्तरदायित्व, पर्यावरणीय चेतना और मानवीय मूल्यों के विकास का मंच होंगे। निष्कर्षतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तभी संभव है जब विद्यालय शिक्षा को एक समग्र जीवन-अनुभव बनाएँ और बच्चों को 'नौकरी योग्य' के साथ-साथ 'जीवन योग्य' नागरिक के रूप में तैयार करें।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा किसी भी समाज की प्रगति और सतत विकास की आधारशिला है। शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता का वास्तविक अनुभव विद्यार्थी, अभिभावक, प्रबंधन-तंत्र और समाज अपने-अपने दृष्टिकोण से करते हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण

समाज में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के मानक तय करना कठिन कार्य है, क्योंकि यहाँ स्थानीय आवश्यकताओं और सामाजिक प्राथमिकताओं में व्यापक भिन्नताएँ पाई जाती हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक बहु-आयामी

*आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, एम.एम.एच. कॉलेज, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश 201 009

अवधारणा है, जिसमें पाठ्यक्रम, शिक्षक, संसाधन, मूल्यांकन, अधोसंरचना, प्रबंधन और समुदाय की सक्रिय भागीदारी सम्मिलित होती है। विद्यालय इस संपूर्ण शैक्षिक पारिस्थितिकी का केंद्र है, जहाँ इन सभी घटकों का समन्वय होता है। अतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक अच्छे विद्यालय का होना अपरिहार्य है। एक अच्छा विद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर बल देता है।

यह समावेशी वातावरण, प्रशिक्षित व प्रेरक शिक्षक, आधुनिक संसाधन, सकारात्मक विद्यालय संस्कृति, सतत मूल्यांकन, शिक्षार्थी-गतिविधियाँ और समुदायिक सहभागिता के माध्यम से शिक्षा को जीवनोपयोगी और मूल्य आधारित बनाता है। भविष्य का विद्यालय मात्र पढ़ाई-लिखाई का केंद्र नहीं होगा, बल्कि वह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की गारंटी देने वाला संस्थान होगा। वहाँ अनुकूली शिक्षण-पद्धतियाँ, बहुविध पाठ्यक्रम, स्मार्ट तकनीक, अनुभवात्मक अधिगम, पर्यावरणीय चेतना, वैश्विक नागरिकता और दार्शनिक दृष्टिकोण पर बल दिया जाएगा। इस प्रकार विद्यालय बच्चों को केवल 'नौकरी योग्य' नहीं, बल्कि 'जीवन योग्य' बनाने में सहायक होंगे। निष्कर्षतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लक्ष्य तभी साकार होगा जब विद्यालय समग्र व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक सरोकार और मानवीय संवेदनाओं को केंद्र में रखकर कार्य करें। यही भविष्य के विद्यालय 21वीं सदी और आगे की पीढ़ियों को बेहतर जीवन और समाज की दिशा देंगे।

किसी भी इकोसिस्टम का उपभोक्ता ही उसकी गुणवत्ता का वास्तविक अनुभव कर पाता है। शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थी, अभिभावक, प्रबंधन-तंत्र

और अंततः समग्र समाज अपने-अपने दृष्टिकोण से शिक्षा की गुणवत्ता का मूल्यांकन करते हैं। भारत जैसे वैविध्यपूर्ण समाज में गुणवत्ता के पैमाने तय कर पाना और भी कठिन हो जाता है। हमारे समाज की विविधताएँ, भिन्नताएँ, स्थानीय आवश्यकताएँ और प्राथमिकताएँ अत्यंत जटिल हैं। इन विरोधाभासों में संतुलन साधने के लिए शिक्षा व्यवस्था को अतिरिक्त भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं। जहाँ तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रश्न है, यह एक बहु-आयामी अवधारणा है, जिसमें पाठ्यक्रम, शिक्षण, संसाधन और मूल्यांकन सहित शिक्षा प्रणाली के विभिन्न पहलू सम्मिलित होते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अर्थ है उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करना, जिसमें कुशलता के साथ शिक्षण उपकरणों का उपयोग किया जाए और रंग, जेंडर, धर्म, नस्ल, जातीयता, सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं भौगोलिक स्थान की परवाह किए बिना एक सहायक शैक्षिक वातावरण का निर्माण किया जाए।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही समग्र विकास का अजस्र स्रोत है— शिक्षा बच्चे के व्यक्तिगत विकास के माध्यम से उसमें आत्मविश्वास और आत्म-मूल्य का रोपण करती है। यह सामाजिक और आर्थिक उन्नति में विद्यार्थी को उत्पादक बनाती है और समाज में सकारात्मक योगदान देने योग्य बनाती है। शिक्षा उसे जीवन के लिए तैयार करती है तथा चुनौतियों से निपटना सिखाती है। शिक्षा विश्व के वास्तविक चतुर्मुखी विकास की कुंजी है। इसीलिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा संयुक्त राष्ट्र के शीर्ष सतत विकास लक्ष्यों में शामिल है, क्योंकि यह गरीबी समाप्त करने का सबसे प्रभावी हथियार है। इसलिए यह सवाल

सामाजिक महत्व का भी है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आवश्यक आधार कैसे तैयार हो और इस महान भूमिका के लिए कौन आगे आए। सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि शिक्षा को वास्तव में उच्च-गुणवत्तापूर्ण बनाता क्या है? उच्च-गुणवत्तापूर्ण शिक्षा वह है जो केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, तार्किक सोच, रचनात्मकता और जीवन-कौशल को भी समाहित करती है। इसमें प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत क्षमताओं, रुचियों और सीखने की गति को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी-केंद्रित और अनुकूली शिक्षण पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं। प्रशिक्षित, प्रेरक और संवेदनशील शिक्षक ज्ञान का संप्रेषण करने के साथ-साथ मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान करते हैं, जिससे बच्चों में जिज्ञासा, आत्मविश्वास और प्रश्न पूछने की क्षमता विकसित होती है। उच्च-गुणवत्तापूर्ण शिक्षा समावेशी और सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करती है, जहाँ सभी बच्चों का सम्मान होता है और उन्हें समान अवसर प्राप्त होते हैं। आधुनिक संसाधन, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, खेलकूद और डिजिटल तकनीक सीखने की प्रक्रिया को रोचक और प्रभावी बनाते हैं। साथ ही सतत मूल्यांकन और नियमित फीडबैक बच्चों की प्रगति का सटीक आकलन करता है और उन्हें सुधारने के अवसर प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, यह शिक्षा सामाजिक और नैतिक मूल्यों, सहयोग, सहभागिता और समुदाय के प्रति जिम्मेदारी के विकास पर भी बल देती है।

निस्संदेह, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के कई प्रमुख घटक हैं जो एक साथ मिलकर एक मजबूत और प्रभावी

शैक्षिक परिवेश का निर्माण करते हैं और शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण उत्पाद के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह घटक निम्नलिखित हैं।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए ये तमाम घटक जहाँ संयुक्त अभ्यास करते हैं, वह है विद्यालय। अतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए विद्यालय का अच्छा होना एक अपरिहार्य आवश्यकता है। एक अच्छे विद्यालय के महत्वपूर्ण सूचक क्या हैं, इसकी समझ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की दिशा में आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

एक अच्छा विद्यालय केवल पढ़ाई ही नहीं कराता, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान देता है। वास्तव में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही समग्र विकास का अजस्र स्रोत है। शिक्षा बच्चे के व्यक्तिगत विकास के माध्यम से उसमें आत्मविश्वास और आत्म-मूल्य का रोपण करती सामाजिक है। यह और आर्थिक उन्नति में विद्यार्थी को उत्पादक बनाती है और समाज में सकारात्मक योगदान देने योग्य बनाती है। शिक्षा उसे जीवन के लिए तैयार करती है तथा चुनौतियों से निपटना सिखाती है।

इन मुख्य घटकों में— विद्यालय, शिक्षक, विद्यार्थी, विद्यालय प्रबंधन-तंत्र, अधोसंरचना, प्रशासन, संसाधन, तकनीकी और समुदाय— सब कुछ समाहित है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए ये तमाम घटक जहाँ संयुक्त अभ्यास करते हैं, वह है विद्यालय।

अतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए विद्यालय का अच्छा होना एक अपरिहार्य आवश्यकता है। एक अच्छे विद्यालय के महत्वपूर्ण सूचक क्या हैं, इसकी

समझ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की दिशा में आगे बढ़ने में सहायक होगी।

एक अच्छा विद्यालय केवल पढ़ाई ही नहीं कराता, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर भी ध्यान देता है।

इनमें सुधार के लिए आवश्यक है कि विद्यालय में समावेशी और सुरक्षित वातावरण हो, जहाँ हर बच्चा सम्मानित और मूल्यवान महसूस करे। प्रशिक्षित और प्रेरक शिक्षक, आधुनिक अधोसंरचना, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियाँ उपलब्ध कराना अनिवार्य है। साथ ही अनुकूली शिक्षण-पद्धतियाँ, तकनीकी उपकरण, स्मार्ट क्लास और अनुभवात्मक अधिगम अपनाना चाहिए। विद्यालय प्रबंधन पारदर्शी, सहभागी और जवाबदेह हो, ताकि शिक्षा केवल परीक्षा आधारित न होकर जीवनोपयोगी, रचनात्मक और सामाजिक रूप से उत्तरदायी बने।

एक अच्छे विद्यालय में क्या-क्या होना आवश्यक है?

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक अच्छा विद्यालय समावेशी शैक्षिक संस्कृति के निर्माण पर ध्यान देता है—

- एक गुणवत्तापूर्ण संस्थान में शिक्षक, शिक्षणेत्तर कर्मचारी और प्रबंधन-तंत्र तक का रवैया सकारात्मक और खुशमिजाज होगा। वहाँ सब तक पहुँच सहज और सुलभ होगी।
- ऐसे विद्यालय का दृष्टिकोण पाठ्यक्रम से लेकर शिक्षण-सामग्री के डिजाइन और डिलीवरी तक विद्यार्थी-केंद्रित होगा।

- ऐसे विद्यालय के शिक्षक सामान्यतः खुश और संतुष्ट दिखेंगे। संस्थान नियमित रूप से अपने शिक्षकों के प्रशिक्षण पर ध्यान देगा और उनका ख्याल रखेगा।
- विद्यालय में एक सशक्त विद्यार्थी-गतिविधि विभाग सक्रिय होगा, जिसमें खेल, साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ, मनोरंजन तथा संवाद और सहयोग के अवसर मिलेंगे।
- गुणवत्तापूर्ण विद्यालय अपनी विद्यार्थी-गतिविधियों में उद्देश्यपूर्ण मनोरंजनात्मक, कलात्मक और सामान्य पाठ्येतर कार्यक्रमों का आयोजन करेगा और विद्यार्थियों व शिक्षकों को उसमें दक्ष बनाएगा।
- एक अच्छा विद्यालय अपने परिणाम पारदर्शी ढंग से अपनी मूल्य-मान्यताओं के अनुरूप प्रस्तुत करेगा।
- विद्यालय की असली पहचान इस बात से होती है कि वह अपना संदेश और छवि समाज तक कैसे पहुँचाता है। अच्छे विद्यालय ऊँचे स्कोर या छद्म अभिजात्य छवि पर नहीं, बल्कि वास्तविक शैक्षिक मूल्यों और सहभागिता पर बल देते हैं।
- एक अच्छा विद्यालय लचीली और किफायती शिक्षा व्यवस्था अपनाता है तथा नई तकनीकों और विधियों के विस्तार में आस्था रखता है।
- शिक्षकों का आत्मविश्वास इस विचार से भरा होता है कि ‘सब बच्चे सीख सकते हैं’।
- विद्यालय की संस्कृति समावेशी होती है, जहाँ बच्चों, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों और प्रबंधन-तंत्र सभी में विविधता का सम्मान होता है।

- शिक्षक विषयवस्तु के जानकार होने के साथ-साथ समसामयिक घटनाक्रमों पर भी तार्किक समझ रखते हैं।
- विद्यालय बच्चों को विद्यालय से बाहर के अनुभवों से जोड़ने के नए-नए तरीके खोजता है।
- विद्यालय सुरक्षित वातावरण, आधुनिक संसाधन और सरोकारी दृष्टिकोण पर विशेष ध्यान देता है।
- विद्यालय का लक्ष्य केवल परीक्षा परिणाम नहीं, बल्कि अच्छी शिक्षा होता है। वह विद्यार्थियों में जीवन-कौशल, नैतिक मूल्य और सामाजिक दायित्वों को विकसित करता है।
- विद्यालय योग्य, प्रशिक्षित, संवेदनशील और प्रेरक शिक्षकों का चयन करता है। ऐसे शिक्षक विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, सोचने और सीखने के लिए प्रेरित करते हैं।
- विद्यालय नवाचारी शिक्षण-पद्धतियों, जैसे—स्मार्ट क्लास, प्रोजेक्ट वर्क, समूह चर्चा, रोल-प्ले, फील्ड विजिट, सर्वे आदि पर बल देता है।
- विद्यालय सुरक्षित और भेदभाव-रहित वातावरण बनाता है तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को समान अवसर उपलब्ध कराता है।
- विद्यालय पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेलकूद, कला-संस्कृति मंच, डिजिटल लर्निंग संसाधन जैसी आधुनिक सुविधाओं का उपयोग करता है और परंपरागत ज्ञान-स्रोतों को भी सक्रिय रखता है।
- विद्यालय केवल अंक-आधारित मूल्यांकन पर आश्रित न रहकर सतत मूल्यांकन और फीडबैक संस्कृति विकसित करता है।

- विद्यालय सामुदायिक भागीदारी को महत्व देता है, अभिभावकों से सतत संवाद करता है और सामूहिक जिम्मेदारी का भाव विकसित करता है।
- विद्यालय विद्यार्थियों को केवल 'नौकरी के योग्य' नहीं, बल्कि 'जीवन के योग्य' बनाने पर बल देता है।

भविष्य का विद्यालय कैसा होगा?

भविष्य का विद्यालय केवल पढ़ाई-लिखाई तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की गारंटी देने वाला होगा। यह विद्यालय यह सुनिश्चित करेगा कि समाज का कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे। शिक्षा उपलब्ध कराना मात्र एक प्रशासनिक कार्य नहीं होगा, बल्कि विद्यालय का नैतिक दायित्व होगा।

भविष्य का विद्यालय अनुकूली शिक्षण-पद्धतियों पर विशेष बल देगा। इसका अर्थ यह होगा कि प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, क्षमताओं और रुचियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्रदान की जाएगी। धीमे सीखने वाले बच्चों के लिए विशेष सहयोग, तेज सीखने वालों के लिए अतिरिक्त अवसर और दिव्यांग बच्चों के लिए समावेशी वातावरण सुनिश्चित किया जाएगा। इस प्रकार का विद्यालय बहुविध पाठ्यक्रम प्रस्तुत करेगा, जिसमें केवल पारंपरिक विषय ही नहीं होंगे, बल्कि कला, संगीत, खेल, योग, जीवन-कौशल, पर्यावरण शिक्षा, डिजिटल साक्षरता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे क्षेत्रों को भी समाहित किया जाएगा। इसके साथ-साथ, विद्यार्थियों को अद्यतन शिक्षण-सामग्री और डिजिटल संसाधनों तक नियमित पहुँच होगी, ताकि वे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बन सकें।

भविष्य का विद्यालय अपने सामाजिक दायित्वों को भी गंभीरता से निभाएगा। यह केवल नौकरी योग्य नागरिक तैयार करने तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि समाज के प्रति सरोकारी, जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिकों का निर्माण करेगा। इस संदर्भ में विद्यालय बच्चों के भावनात्मक पक्ष पर भी विशेष बल देगा। विद्यार्थियों को तनाव-प्रबंधन, आत्म-नियंत्रण, सहानुभूति, सहयोग और करुणा जैसे गुण सिखाए जाएँगे। ऐसा विद्यालय विद्यार्थियों को दार्शनिक दृष्टिकोण से भी संपन्न करेगा। इसका उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं होगा, बल्कि उन्हें जीवन का अर्थ समझाना होगा। भविष्य का विद्यालय बच्चों को इस प्रकार तैयार करेगा कि वे संवेदनशील, सहयोगी, विवेकशील और सामाजिक रूप से उत्तरदायी बनें।

इसके अतिरिक्त, भविष्य के विद्यालय—

- स्मार्ट टेक्नोलॉजी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) आधारित शिक्षण को अपनाएँगे।
- प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा और अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देंगे।
- विद्यार्थियों में नवाचार, शोध और समस्या-समाधान की क्षमताओं का विकास करेंगे।
- पर्यावरण-हितैषी नीतियों को अपनाकर बच्चों में सतत विकास के प्रति जागरूकता जगाएँगे।
- वैश्विक नागरिकता की भावना विकसित करेंगे, ताकि विद्यार्थी स्थानीय ही नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर की चुनौतियों को भी समझ सकें।
- विद्यालय अभिभावकों और समुदाय के साथ निरंतर संवाद रखेंगे और शिक्षा को सामूहिक जिम्मेदारी मानेंगे।

भविष्य का विद्यालय केवल ज्ञान-संप्रेषण का केंद्र नहीं होगा, बल्कि वह समग्र व्यक्तित्व निर्माण का उदार मंच बनेगा। वहाँ प्रत्येक बच्चा न केवल पढ़ना-लिखना सीखेगा, बल्कि जीवन जीने की कला, सामाजिक समरसता, पर्यावरणीय चेतना और मानवीय संवेदनाओं से युक्त एक सशक्त व्यक्तित्व विकसित करेगा। यही विद्यालय 21वीं सदी और उससे आगे की पीढ़ियों को बेहतर भविष्य की ओर ले जाएँगे।

निष्कर्ष

एक अच्छा विद्यालय वही है जो केवल पढ़ाई का माध्यम न होकर शिक्षा को एक जीवन-अनुभव बना दे। विद्यालय तभी गुणवत्तापूर्ण कहा जा सकता है जब वह समावेशी, सहयोगात्मक और प्रेरणादायी वातावरण प्रदान करे, जहाँ प्रत्येक बच्चा सम्मानित और मूल्यवान महसूस करे। ऐसे विद्यालय में शिक्षक केवल ज्ञान संप्रेषक नहीं होते, बल्कि मार्गदर्शक, प्रेरक और सह-शिक्षार्थी के रूप में कार्य करते हैं, जो विद्यार्थियों की जिज्ञासा को प्रोत्साहित करते हैं और ज्ञान-निर्माण की प्रक्रिया को सरल बनाते हैं। इस प्रकार का विद्यालय विद्यार्थियों को सक्रिय भागीदारी, प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता और सहयोगात्मक अधिगम के अवसर देकर उन्हें आत्मनिर्भर, तार्किक और रचनात्मक विचारक बनाता है। शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न रहकर, जीवन कौशल, संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों को भी पोषित करती है। अच्छा विद्यालय बच्चों को केवल परीक्षा की तैयारी तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें जीवन के विविध क्षेत्रों में सफल और सार्थक योगदान देने के लिए तैयार करता है। यही

वह शिक्षा है जो विद्यार्थियों को आनंदमय अधिगम अनुभव, सतत जिज्ञासा और सीखने की लालसा से जोड़कर उन्हें भविष्य की चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाती है। समग्र रूप से यह लेख इस तथ्य को रेखांकित करता है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा किसी एक घटक पर निर्भर न होकर एक सुसंगठित और संवेदनशील शैक्षिक व्यवस्था का परिणाम होती है, जिसका केंद्र विद्यालय होता है। विद्यालय यदि केवल पाठ्यक्रम पूर्ण कराने तक सीमित रह जाए, तो शिक्षा अपने व्यापक सामाजिक और मानवीय उद्देश्य को पूरा नहीं कर पाती। इसलिए आवश्यक है कि विद्यालय सीखने को आनंदमय, अर्थपूर्ण और जीवन से जुड़ा

अनुभव बनाए। ऐसा विद्यालय बच्चों की विविध क्षमताओं को पहचानकर उन्हें विकसित करने के अवसर देता है और समानता, सम्मान व सहभागिता की संस्कृति को मजबूत करता है। शिक्षक, प्रबंधन, अभिभावक और समुदाय की साझी जिम्मेदारी से ही ऐसा वातावरण संभव है। भविष्य की चुनौतियों को देखते हुए विद्यालयों को नवाचार, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व को अपनाना होगा। जब विद्यालय शिक्षा को मानव निर्माण की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करेंगे, तभी वे बच्चों को संतुलित, जागरूक और जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार कर सकेंगे और वास्तव में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लक्ष्य साकार होगा।

संदर्भ

- रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.
- . 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.
- . 2023 *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023* (अंतिम संस्करण). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.in/pdf/NCFSE-2023-August_2023.pdf
- शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.